अंतिम आदेश का 150वाँ वार्षिक संस्करण

एक भले पिता का अंतिम आदेश

संत कुरियाकोस एलियास चावरा

एक भले पिता का अंतिम आदेश

संत कुरियाकोस एलियास चावरा

चावरा सेंट्रल सेक्रटेरियट्
चावरा हिल्स, काकनाडए
कोची 680 030 केरल, भारत
2018

एक भले पिता का अंतिम आदेश (1868)

(*Original in Malayalam: Oru Nalla Appante Chavarul*)

Author
Saint Kuriakose Elias Chavara (1805-1871)

Hindi Translation
James M. L. CMI

Publisher
Chavara Central Secretariat
Chavara Hills, Kochi

150th Year Revised and Updated Hindi Edition
© **2018** Chavara Central Secretariat

Cover Design: Printartz, Kochi

Layout: CCS, Kakkanad

Printing: Viani Press, Kochi

Chavara Central Secretariat
Chavara Hills, Kakkanad, Post Box 3105
Kochi 682 030 Kerala, India

अंतर्वस्तु

समर्पण	7
प्राक्कथन	9
भाग 1	
पारिवारिक नियम	11
प्रेम	11
थ्वनम्रता	14
आपसी व्यवहार	15
परिश्रमशीलता	16
प्रोपकार	19
न्यायशीलता	20
ईश भक्ति	22
सहनशीलता	24
अच्छी किताबें	25
हुक्म पर्व के दिन का आचरण	25
दिनचर्या	26
भाग 2	
बच्चों की परवरिश	29
संत कुरियाकोस एलियास चावरा की संक्षिप्त जीवनी	37

संत चावरा से परिवारों के लिए प्रार्थना 41
संत कुरियाकोस एलियास चावरा के जिन्दगी की महत्वपूर्ण घटनायें 43

समर्पण

मेरे अपने प्रियजन,

मैं शारीरिक और जैविक रूप से चेन्नकरी पल्ली के चावरा कुरियाकोस का पुत्र हूँ। ईश्वर की कृपा से इस संसार में आया हूँ। चूंकि इस परिवार एवं इसके पूर्वजों के माध्यम से मेरा जन्म हुआ है अतः स्वभाविक रूप से परोपकार एवं न्याय द्वारा कृतज्ञता पूर्वक आपकी सेवा के लिए कृत संकल्प हूँ। सभी लोगों से अलग विशेष रूप से तुम लोगों के लिए मैंने कुछ नहीं किया है। इसलिए, मेरे हाथ से लिखा यह पत्र मैं तुम्हें दे रहा हूँ। मैं मर जाऊँगा, पर इस कागज़ की मृत्यु नहीं होगी। इसलिए हे कैनकरी छोटी पल्ली के मेरे बच्चों, इसे मेरी अमानत के रूप में संभालकर रखने के लिए मैं यह तुम्हें सौंपता हूँ।

मेरे कुल के और मेरे अपने, दोनों प्रकार से मेरी संतान हुए तुम लोगों को यह मेरा अंतिम आदेश (वसीयतनामा) है। यह एक चिन्ह होगा कि तुम लोग मेरे उत्तराधिकारी हो। ईश्वर ने तुम लोगों पर अपार कृपाएँ न सिर्फ तुम्हारे अपने कर्मों के कारण बरसायी है बल्कि इस संसार से चले गए तुम्हारे पूर्वजों के ईश्वर पर सच्चे प्रेम और भरोसे के कारण है। इसे नष्ट न होने दें। मैं इस संसार

में आया था, इसे याद करने के लिए इसे लिखकर अपने घरों में संभालकर रखना। इसे प्रार्थना भवन के पेटी में रखना। महीने के पहले शनिवार सब लोग मिलकर यह पढ़ना। इससे मेरी मृत्यु के दिन तुम्हें याद रहेगा। मेरी याद में और कुछ नहीं करना। पर, हर महीने इसे पढ़ने के बाद – 'हे प्रभु! धर्मियों के लिए तैयार किये गये स्वर्गीय भवन में इस पुरोहित की आत्मा को स्वीकार कर।' इतनी विनती मेरे लिए करने का तुम लोगों से आग्रह करता हूँ।

प्राक्कथन

अच्छा ख्रीस्तीय परिवार स्वर्गराज्य के समान है, जहाँ खून और प्यार के रिश्ते में बंधे सदस्य, माता–पिता के प्रति आदर और आज्ञाकारी बनकर, ईश्वर और इनसान के साथ प्रेम और शान्ति से रहकर, अपने जीवन की स्थिति के अनुसार अनंत जीवन प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। इस दुःखद सांसारिक जीवन में प्रेम भरे शान्तिपूर्ण और व्यवस्थित परिवार में जीना ही एक मात्र मधुर सांत्वना एवं दिलासा है। इसी प्रकार व्यवस्था और शांति रहित तथा ईश्वरीय भक्ति और मुक्ति के प्रति लापरवाह परिवार में जीना सबसे बड़ा दुःख है। ऐसे परिवार कितने आँसू, झगड़े और मृत्यु के कारण बने हैं। कई बड़े और सम्मानित परिवारों का विनाश भी ऐसे ही हुआ है। ऐसी बुराई और अप्रिय घटनाएँ न हो, इसी इच्छा से प्रभु से ईश्वरीय प्रकाश और शान्ति की दुआ करके मैंने यह परिवार नियम लिखा है। मैं आप लोगों से आग्रह करता हूँ कि, आप सब इसे अपने पूर्वजों के उपदेश और आदेश के रूप में अपनायें एवं अनुसरण करें।

भाग 1
पारिवारिक नियम

प्रेम

1. एक दूसरे से प्यार करो, एक दूसरों की कमियों और गलतियों को क्षमा करो। ऐसा करने से तुम्हें इस संसार में शांति और स्वर्ग में अनन्त आनन्द प्राप्त होगा। एक ही परिवार में भाईयों के बीच और स्त्रजनों के बीच झगड़ा, लड़ाई होते रहना कितनी दुःखद बात है। प्रभु ने ही कहा है – "जिस राज्य में फूट पड़ गई हो, वह राज्य टिक नहीं सकता। जिस घर में फूट पड़ी हो वह घर जल्द ही नष्ट हो जाएगा।" तुम्हारी गलतियाँ और कमियों के लिए तुम्हीं लोग एक दूसरे को क्षमा नहीं करोगे तो बाहर के लोग कैसे क्षमा करेंगे? कल दूसरे लोग तुम्हारी गलतियों को माफ करें तो क्या आज तुम्हें दूसरों की गलतियों को माफ नहीं करना चाहिए? यदि तुम सिर्फ अपने लिये भलाई करने वालों को ही प्यार करते हो तो, अज्ञानी और अविश्वासी लोगों की अपेक्षा तुम ज्यादा क्या करते हो? आदि पिता आदम से मिले दुःख–संकट को हम अपनी ओर से

क्यों ज्यादा बढ़ायें? एक दूसरे से झगड़ा करने वालों की जिन्दगी दुर्भाग्यपूर्ण है। एक बार एक बुढ़िया ने एक घर में कई कारणों से झगड़ा करवाये तो शैतान उसके सामने प्रकट होकर एक थैली पूरा सोना ईनाम में देकर उससे कहा – जो काम करने के लिए मैं तीन साल से प्रयत्न कर रहा था वह तुमने तीन महीने में करवा दिया। इसलिए तुम मेरी सलाहकार बनकर मेरे साथ रहो। इतना कहकर उसे अपने साथ नरक ले गया। एक परिवार की प्रतिष्ठा और गौरव बिना किसी झगड़े से आपस में शांन्ति से रहने में है। बैरियों से प्रतिशोध करने की शक्ति जानवरों में भी है। लेकिन उन्हें क्षमा करने की महा शक्ति और विवेक सिर्फ भले और सज्जन व्यक्तियों में ही है। एक बार कॉनस्टेटियन चक्रवर्ती अपने दरबारियों के साथ जा रहे थे, रास्ते में किसी ने उनके गाल पर थप्पड़ मारा। तब दरबारियों ने उन्हें सलाह दी कि उस दुष्ट को दण्ड दे और मार डाले। तब राजा बोले – "मेरे सबसे छोटे अधिकारी भी जो कर सकते हैं, वह करना कौन सी बड़ी बात है। इसलिए मैं उसे क्षमा करता हूँ यही मेरी ताकत है।"

2. कोर्ट–कचहरी व्यवहार परिवारों को विनाश की ओर ले जाता है। कितना भी न्याय संगत कार्य हो, अंत में वह यह देखेगा कि कचहरी में नहीं जाना ही बेहतर था। कचहरी में जाने से किसी को भी ज्यादा फायदा या आनंद नहीं मिला है।

3. पारिवारिक समारोह आदि रविवार को मनाना आत्मा के विनाश का कारण बन जाता है। यह प्रभु का दिन है, इसे शैतान का दिन मत बनाओ। इसी प्रकार घर में कोई मर जाता है तो, जिसे जरूरी काम है, वे घर में रहें। बाकी लोग रविवार को गिरजा अवश्य जाएँ, नहीं जाना ईश्वर और कलीसिया के नियम के विरूद्ध बुरा आचरण है।

4. अनिवार्य कार्य के अलावा ऋण मत लेना। यदि कभी लिया हो तो उसे जितना जल्दी हो सके वापस करो। प्रेम और सद्भाव के बिना कर्ज भी मत दो। धनी परिवार वही है, जिस पर कोई ऋण नहीं है। यदि पूर्वजों द्वारा मिस्सा का हिसाब या काई अन्य कर्ज बाकी रह गये हो तो उसे जल्दी ही बड़ी दिलचस्पी से चुका दो। उसकी उपेक्षा करना हानिकारक

है। यह परिवार पर ईश्वरीय कोप का कारण बन जाता है।

विनम्रता

5. अपना धन और शक्ति का दिखावा मत करो। जो दिखावा करता है वह निचले स्तर का व्यक्ति है। अपनी संपत्ति पर इठलाने वाले को जल्दी ही भीख माँगना पड़ेगा। यह संसार में आम बात है। एक बार राजा दाऊद ने अपनी शक्ति और महिमा दिखाने के लिए अहंकार से भरकर जनगणना की आज्ञा निकाली। तब ईश्वरीय कोप महामारी के रूप में राज्य पर पड़ा। (सामुएल का ग्रंथ 24)

6. पारिवारिक और सामाजिक समारोह में अपनी क्षमता से ज्यादा धन व्यय मत करो। हर बार ऐसा करने में तुम सक्षम नहीं होंगे। तीव्र गति से जलकर एवं अधिक प्रकाश देकर समाप्त होने वाले भूसे के ढेर से बेहतर है रातभर जलने वाला नन्हा दीपक। सबसे महान व्यक्ति कौन है? पूछने पर प्रसिद्ध दार्शनिक देमोक्रीटस ने बताया कि जो अपने आप को सबसे छोटा दिखाते हों, वही है। अपव्यय और फिजूलखर्ची से गरीब, दुःखित व्यक्ति से एक ज्ञानी आदमी ने कहा – "भाई! तुमने

अपना दीपक दिन में नहीं जलाया होता तो रात में जला सकते थे।

आपसी व्यवहार

7. दूसरों के घरों में घूसकर खबर न ढूँढते रहो। यदि तुम अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह सही रूप से कर रहे हो तो तुम्हें दूसरों के मामलों में अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप करने का समय नहीं मिलेगा।

8. अव्यवस्थित और ईश्वरीय भक्ति रहित परिवारों से रिश्ता मत बनाओ। पारिवारिक भलाई और खुशी धनी रिश्तेदारों से नहीं, बल्कि ईश्वरीय कृपा और भक्ति से संपन्न व्यक्तियों से होती हैं। धनी रिश्तेदार कितने परिवारों में दुःख और बरबादी का कारण बनें हैं।

   फ्रान्स में एक व्यक्ति का एक ही बेटा था। उसने अपने बेटे की शादी अपने से बहुत धनी एक प्रभु की बेटी से कराने का कठिन प्रयास किया। अंत में अपनी पूरी संपत्ति बेटे के नाम पर लिख देने की शर्त पर शादी हो गयी। लेकिन शादी के कुछ दिनों बाद ही उसकी बहु और उसके माता–पिता ने उस

आदमी को निम्न कुल और प्रतिष्ठा का बताकर उसे अपने ही घर से बाहर निकाल दिया। उसे भीख माँगकर जीना पड़ा और अपने ही पुत्र के घर के बाहर फेंके गये झूठन के लिए वह तरसता रहा।

9. सभी तरह के लोगों को अपने घर में आने नहीं देना अर्थात ईश भक्ति में रहने वाले सज्जन लोगों को ही तुम अपने घर में स्वीकार करो। यह एक कहावत है – "तुम्हारा मित्र कौन है मुझे बताओ, मैं बताऊँगा तुम कौन हो।"

10. सबको यह जानने दो कि तुम्हारा घर अशोभनीय बातचीत, अख्रीस्तीय व्यवहार, पड़ोसियों और दूसरों के प्रति अनुचित आलोचना और गपशप की जगह है। दूसरों की बुराई की चर्चा तुम्हारे घर में हो तो उसकी बुराई का दण्ड तुम्हारे घर पर भी होगा। एक आदमी की आदत थी कि घूम–घूम कर दूसरों की बुराई करना। वह पागल हो गया और अपनी ही जीभ काटने से उसे फोड़ा हो गया और उसकी मृत्यु बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण हुई।

परिश्रमशीलता

11. हमेशा नई चीज़ों को खरीदने से पहले पुरानी चीज़ों को सुधारने की कोशिश करो। परिवारों की संपत्ति वस्तुओं की संख्या पर नहीं उसकी गुणवत्ता पर निर्भर है। एक परिश्रमशील व्यक्ति अपनी थोड़ी बहुत संपत्ति में बड़ी खुशहाली से रहता था। लेकिन कुछ ईर्ष्यालु पड़ोसियों ने उसके विरूद्ध मुकदमा चलाया कि उसे ज़मीन के अंदर से खज़ाना मिला है और उसने उसे घर में छिपाकर रखा है। राजा ने उसे बुलाकर उसकी पूरी संपत्ति का लेखा–जोखा प्रस्तुत करने को कहा। उसने राजा से कहा कि मेरी संपत्ति मेरा खेत है। उस मिट्टी को मैं अपने पसीने से सींचकर सोना उगलवाता हूँ, यह कहकर वह गर्व से वापस चला गया।

12. तुम्हें अपनी अवस्था के अनुरूप काम करना चाहिए। काम न करना सामान्य लोगों की आदत नहीं। यह उनकी आदत है जिनका कोई घर–परिवार, बाल–बच्चे नहीं हैं। आलस्य सभी दुर्गुणों की माता है, खास तौर पर मदिरापान का कारण भी है। नशापन संसार के सामने लज्जाजनक और ईश्वर के सामने अपराध भी है। कात्तोन नामक रोमा

शहर के अधिकारी ने यह सिखाने के लिए कि जो रोमा शहर में रहना चाहते हैं, उन सब को काम करना चाहिए। यह आज्ञा निकाली कि सबको अपनी हथेलियाँ दिखानी होंगी, जिनका खुरदुरापन उनके कठोर परिश्रम का मापदण्ड होगा। इसके अतिरिक्त धनी एवं प्रभुत्व लोगों को अपने व्यवसाय के अनुरूप औजार साथ लेकर चलना होगा।

13. वाणिज्य और व्यापार आत्मा को ही नहीं संपत्ति को भी जोखिम में डालते हैं। जीवन यापन के लिए कोई और काम नहीं मिले तो व्यापार करना गलत नहीं है। पर वह अत्यंत सावधानी से और न्यायपूर्ण तरीके से करना चाहिए। बेईमान व्यापारी कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। छल–कपट और धोखाधड़ी से अर्जित धन ओस की बूंद के समान लुप्त हो जाएगा।

    दो व्यापारी थे, जो कई तरह की चालाकी और छल के बावजूद भी व्यापार में उन्नति नहीं पा सके तो एक दिन दोनों व्यापारी पापस्वीकार करने के लिए एक पुरोहित के पास गये और यह बात उनसे कही। पुरोहित ने उनसे कहा – आज से तुम व्यापार में कोई

चालाकी नहीं करना और झूठ नहीं बोलना। ऐसा करने से एक ही साल में उन्हें अच्छी प्रगति मिली।

परोपकार

14. जिस दिन किसी का भला न किया, वह दिन तुम्हारा व्यर्थ है। तुम यह आग्रह न करो कि दूसरे लोग तुमसे डरे, बल्कि यह चाहो कि वे तुमसे प्यार करें। कोई भी भिखारी तुम्हारे घर से खाली हाथ लौट न पाये, अपनी क्षमता के अनुसार दान दो। एक–दूसरे की मदद करना – ईश्वर की दी हुई आज्ञा समझकर एक व्यक्ति ने अपनी जिन्दगी का नियम बनाया कि हर दिन किसी न किसी के लिए कुछ भला करना है। एक रात भोजन के समय उसे याद आया कि उस दिन उसने किसी के लिए भी कोई भला कार्य नहीं किया तो, तुरन्त उठकर वह अपने पड़ोसी की मदद करने उसके पास गया और फिर वापस आकर उसने अपना भोजन ग्रहण किया।

15. अतिव्यय और कंजूसी दोनों अधर्म है। कंजूस का धन कीड़ा खायेगा और अतिव्ययी का विलास धुँए के समान उड़ जाएगा। एक जगह एक आदमी था जो अपनी आय के

अनुसार घर चला रहा था और दान धर्म भी कर रहा था। उसने जिन्दगी में तरक्की पाई और जब वह धनी बन गया, उसने दान धर्म भूलकर अपने लिए सम्पत्ति जमा करना शुरू किया। ऐसे में उसके पाँव पर एक घाव हो गया और जब उसमें से दुर्गंध आने लगी तो उसने वैद्यों को बुलाया। इलाज के लिए बहुत ज्यादा खर्च होने लगा। तब एक स्वर्गदूत ने प्रकट होकर उससे कहा – "तुम यह जानों कि जो दान–धर्म नहीं करके अपने लिए संपत्ति जमा करता है, उसका धन इस प्रकार पानी में बह जाएगा।"

16. ज्यादा मित्र न बनाओ, बल्कि हजारों में सावधानी से किसी एक को चुनों। जो ईश्वर से प्रेम नहीं करता, तुम से भी प्रेम नहीं करेगा। दाऊद और जोनाथन एक दूसरे से प्यार करते थे। उनका प्यार सच्चा था और एक मन होकर उन्होंने अंत तक प्यार किया और एक दूसरे की मदद की। छोटी–छोटी बातों से उनका प्यार कम नहीं हुआ और विपत्तियों के समय वह सुदृढ़ होते गये।

न्यायशीलता

17. चोरी की गई वस्तुएँ थोड़ी देर के लिए भी अपने घर में न रखने दे। पवित्रात्मा हमें सचेत करते हैं कि चोरी का माल रखने वाले घर जल जायेंगे। चोरों की संगत न रखो। कल तुम्हारी वस्तुओं की भी चोरी करने में वह पीछे नहीं हटेगा। इतना ही नहीं, उनके पापों के तुम भी भागीदार बनोगे।

    एक ऐसा व्यक्ति था जो बेईमानी से दूसरों की वस्तुओं का अपहरण करके धनी बन गया था। जब वह मरणासन्न था, तब अपनी संपत्ति के बँटवारे की लिखापढ़ी करने के लिए किसी को बुलाया और इस प्रकार लिखने को कहा – "मेरी आत्मा को मैं शैतान को देता हूँ।" यह सुनकर उसके बच्चों ने कहा – 'पिता जी, यह क्या कर रहे हैं? क्या आपने याद्दाश्त खो दी है?' तब मरणासन्न व्यक्ति ने कहा –"मैं अच्छे से समझकर ही बोल रहा हूँ, लिखने दो। दूसरों की संपत्ति का अपहरण करने की प्रेरणा देने वाली मेरी पत्नी की आत्मा को भी मैं शैतान को देता हूँ। मेरे बच्चों, तुम्हारी आत्माओ को भी शैतान को सौंप देता हूँ, जिनके लिए मैं ने ये सब

गलत काम किये।" इतना कहकर उस हतभाग्य की मृत्यु हुई।

18. मजदूरों को न्यायोचित मजदूरी देने से इनकार या विलंब न करो, क्योंकि यह प्रतिशोध के लिए ईश्वर को पुकारने वाला पाप है। गरीबों का अपमान या अनादर न करो। उनके आँसू देखकर ईश्वर तुमसे प्रतिशोध लेंगे।

    लुवैन शहर की एक घटना है। इस शहर में एक ज़मींदार था जिसकी एक कुटिया में एक विधवा अपने तीन–चार बच्चों के साथ रहती थी। यह आदमी हमेशा उनकी अवहेलना करता था और कई प्रकार से तंग करता था। इससे परेशान उस विधवा ने बड़े दुःख के साथ ईश्वर से प्रार्थना की – 'हे प्रभु, मुझे इस अन्याय और संकट से बचाओ। उस पल ही वह ज़मीदार खड़े–खड़े ही गिर गया और मर गया।

ईश भक्ति

19. परिवार की सच्ची संपत्ति ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति है। ऐसा परिवार इस संसार में और परलोक में ईश्वरीय कृपा और अनुग्रह

का पात्र बनेगा। निन्दा और असभ्य संवाद अच्छे परिवार की प्रतिष्ठा और चमक को काले बादलों के समान ढक देते हैं।

हो सके तो हर रोज पवित्र बलिदान में भाग लेना। इस भक्ति में सोमवार को मरी हुई आत्माओं के लिए, शुक्रवार, प्रभु येसु के पीड़ासहन के स्मरण में और शनिवार व्याकुल माता के स्मरण में बलिदान में भाग लेना। घर से हर दिन प्रत्येक व्यक्ति नहीं जा सके तो बारी–बारी से एक दो जन को प्रति दिन की प्रवित्र बलिदान में भाग लेना चाहिए। महीने में कम से कम एक बार पाप स्वीकार करके परम प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। नवरोजी प्रार्थनाओं में और माता मरियम के पर्व की तैयारी की प्रार्थनाओं में भाग लेना तथा माता मरियम और संत जोसेफ की विशेष भक्ति माह में गिरजा जाकर भाग नहीं ले सके तो घर में ही प्रार्थनायें करना।

उठने–बैठने में, खेलने में और पूरे व्यवहार में मर्यादा और शालीनता को भंग न करो। निर्लज्जता और अभद्रता ईश्वर और इनसान के सामने अपमानजनक व्यवहार है। अपने बच्चे, लड़के–लड़कियों के लज्जाजनक वस्त्र

धारण और अभद्र व्यवहार को सुधारने में माता–पिता के ध्यान नहीं देने के कारण कितने लोग नरक जाते हैं, यह हम न्यायविधि के दिन जानेंगे।

फ्रान्स में एक लड़का बड़ी शालीनता से रहता था। जो अकेले में रहते समय भी अपने शरीर को ही नहीं अपने हाथ–पैरों को भी कपड़े से ढाँकता था। उसने जब सुना कि नरक में बिना कपड़े के रहना पड़ेगा तो वह डरकर रो पड़ा। देखो, उस बच्चे ने शालीनता को कितना महत्व दिया।

सहनशीलता

20. सभी कठिनाईयों और बीमारियों में ईश्वर की इच्छा के समक्ष अपने आपको समर्पित करना। केवल सुख के समय धैर्य रखने वाला व्यक्ति सबल नहीं कहलाता है। एक अच्छा भक्त यही कहता था – इस संसार में सब कुछ मेरी इच्छा के अनुसार ही चलता है, क्योंकि, जो ईश्वर की इच्छा है, वही मेरी इच्छा है।

संत अंब्रोसिस ने एक भवन में प्रवेश करते समय जब यह सुना कि उस घर में कभी भी कोई दुःख या बीमारी नहीं हुई है तो उन्होंने

अपने साथियों से कहा – "हम इस घर से तुरन्त निकले, इस घर पर जल्दी ही विपत्ति आने वाली है।" बिना विलंब वह घर गिर गया और उसमें रहने वाले सब मर गये। पीड़ा और दुःख में ही हम ईश्वर की इच्छा को पहचानते हैं।

अच्छी किताबें

21. ईश्वरीय विश्वास के विरूद्ध में लिखे शास्त्र पुस्तक भ्रम और अज्ञानता उत्पन्न करती है। ऐसी किताबें और अश्लील पुस्तक घर में रखना भूसे में आग छिपाने जैसा हैं। ज्ञान की एवं दर्शन शास्त्र की पुस्तके विश्वास को बढ़ाती और बच्चों को उपहार स्वरूप देने लायक अमूल्य निधि है। अपनी क्षमता के अनुसार ऐसी किताबें खरीदकर रखना चाहिए। एक भिखारी अनपढ़ था, फिर भी जो दान में मिलता, उससे किताबें खरीदकर पढ़े–लिखे लोगों से पढ़वाकर सुनता और उसके आदर्शों के अनुसार जीकर दूसरों के लिए एक उदाहरण बन गया था।

हुक्म पर्व के दिन का आचरण

22. हर रविवार और हुक्म पर्व के दिन पवित्र बलिदान में भाग लेने मात्र में तृप्त न होकर,

दिन के अधिकतम समय प्रवचन सुनने, अच्छी किताबें पढ़ने और रोगियों की, विशेषकर गरीब रोगियों की सेवा आदि भले कार्यों पर भी ध्यान दे।

23. ईश्वर पर श्रद्धा रखने वालों को ही नौकर और सेवक के रूप में रखना। उनकी संख्या कम ही रखो। इन लोगों के द्वारा कितने घरों में शैतान अपना काम चलाता रहता है। अपने सेवकों के व्यवहार पर, उनके नैतिक आचरण और आत्मा की भलाई पर ध्यान रखने का उत्तरदायित्व सभी मालिकों को है।

दिनचर्या

24. सोने और उठने का समय नियमित हो। कम से कम 6 बजे ही उठना और उठते ही प्रभात प्रार्थना करना। जो कर सके, पवित्र बलिदान में भाग लेना। सुबह आठ बजे नाश्ता करना और 12 बजे मध्याह्न भोजन। शाम को दूत–संवाद प्रार्थना के बाद सब जन पारिवारिक प्रार्थना में भाग लें। उसके बाद आधा घण्टा मनन–चिंतन में व्यतीत करना। जो कोई अच्छी किताबें पढ़ी हों, उसी विषय में मनन–चिंतन कर सकते हैं। घर में कोई अतिथि या समाज के कोई प्रधान व्यक्ति आयें

तो भी इस क्रम को भंग नहीं करना। वे अपनी ओर तथा ईश्वर अपनी ओर बुला रहे हैं, और ईश्वर देखते हैं कि तुम किसकी ओर जा रहे हो। इसलिए किसी भी कारण वश इस क्रम को मत त्यागो। इस प्रकार तुम दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हो। फिर भी कुछ लोग तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे, तो उसे तुम अपने लिए अनुग्रह ही समझना। आठ बजे रात के भाजन के बाद, अपने अंतकरण की जाँच और सोने के पहले की प्रार्थनायें करके सोने जाओ। इस दिनचर्या के पालन में परिवार के मुखिया को सतर्क रहना चाहिए। हर रविवार और महीने की पहली तारिख को यह पारिवारिक क्रम को सबके सामने पढ़ना चाहिए।

भाग 2
बच्चों की परवरिश

1. माताओं–पिताओं, यह अच्छे से समझ लेना कि बच्चों की परवरिश आपका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व है। बच्चे, ईश्वर द्वारा आपके हाथों सौंपी गई अमूल्य निधि है। प्रभु येसु के पावन लहू से पवित्रीकृत करके, उनके सेवक बनाने और अंत में न्यायविधि के दिन उन्हें वापस करने के लिए प्रभु येसु द्वारा तुम्हारे हाथों में सौंपी आत्मायें आपके बच्चे हैं। तुम्हारी गलती के कारण तुम्हारे बच्चों में से कोई नरक जाता है तो वह तुम्हारी मुक्ति के लिए भी बाधक होगा। ओरिजिन नामक ज्ञानी व्यक्ति ने लिखा है कि अपने बच्चों के कारण माता–पिता को दण्ड मिलता हैं तो न्यायविधि के दिन ईश्वर माता–पिताओं से बच्चों के बुरे कर्मों का जवाब मांगेंगे। यदि तुम आशा करते हो कि तुम्हारे बच्चें अच्छे इनसान बनें और तुम्हारी वृद्धावस्था में सहारा बनें तो बचपन में ही उन्हें अच्छे ख्रीस्तीय बनाओ। बचपन में ही वे ईश्वर से प्यार और श्रद्धा नहीं रखते हैं तो वे बड़े होकर तुम्हारा आदर और तुमसे प्यार नहीं करेंगे। माता–पिता को अपने बच्चों को बार–बार पवित्र परिवार के संरक्षण में सौंपकर

उनके लिए प्रार्थना करना चाहिए। अपने बच्चों के लिए माँ की प्रार्थना ईश्वर नहीं ठुकरायेंगे।

2. बच्चे समझदार बनते ही उन्हें येसु, मरियम और जोसेफ का नाम पुकारना सिखाओ। उनकी प्रतिमाओं को दिखाकर उनका चुंबन करके उनके प्रति प्रेम और श्रद्धा प्रकट करना सिखाओ। जब बच्चे बोलने लगे तो उन्हें, हे पिता हमारे!, प्रणाम मरियम, दूत संवाद आदि छोटी–छोटी प्रार्थनायें सिखाना चाहिए। जैसे तुम उनके शरीर के लिए पोषक आहार देते हो, उसी प्रकार उनकी आत्मा का भी पोषण करना कितना सराहनीय है।

3. बच्चों को घर के अंदर वस्त्रहीन न घूमते रहने दे। वह तो बच्चा है, क्या समझेगा, सोचकर उनके सामने अशोभनीय वार्तालाप न करें।

4. माता–पिता को यह जानना चाहिए कि उनके कमरे में बच्चों को कभी नहीं सुलाना चाहिए। लड़के–लड़कियों को भी एक ही कमरे में नहीं सोने दो अन्यथा उस उम्र में वे जो नहीं जानते हैं शैतान उन्हें सिखायेगा।

5. बच्चों को माता–पिता की नज़र से दूर खेलने मत जाने दो। बच्चों की सही देखभाल नहीं

करने वाले सेवकों पर भरोसा न रखो। अकसर वे ही बिगाड़ते हैं।

6. जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, उन्हें स्कूल भेजो। इतना ही नहीं, उनकी पढ़ाई और उनके दोस्तो के बारे में भी पूछ–ताछ करो। रविवार को सप्ताह भर की पढ़ाई की जाँच करो।

7. बच्चों को रिश्तेदारों के घरों में ठहरने न दो। अक्सर वे फरिश्ते बनकर जाते हैं और शैतान बनकर लौटते हैं।

8. बच्चे जब सात साल के हो जाते हैं तो उन्हें पापस्वीकार के बारे में सिखाओ और उचित रीति से पाप स्वीकार करने दो। विशेष रूप से उन्हें माता मरियम की भक्ति में बढ़ना सिखाओ।

9. बच्चों के साथ अधिक सख्ती और अधिक दया न दिखाओ। अति वात्सल्य उन्हें अहंकारी बनायेगा। अति कोप और दण्ड उनमें निराशा और आत्मग्लानि उत्पन्न करेगा। शारीरिक दण्ड देने से पहले उन्हें विवेक पूर्ण ढंग से गलती समझाओ। चाहे तो भोजन में नियंत्रण रखो या कभी ज़मीन पर घुटने टेकने दो। बच्चों को समझाते–सुधारते

समय बुरे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि आप बुरे शब्दों का प्रयोग करते हैं तो आप उन्हें सुधारने से ज्यादा भविष्य में वे भी अपने बच्चों के साथ ऐसा ही करे, यह सिखा रहे हो। माँ अपने आचरण से पिता का आदर–सम्मान करना सिखाए और उसी प्रकार पिता भी माँ से प्यार और आदर करना सिखाए। यदि माता–पिता एक दूसरे से प्यार और सम्मान नहीं करते तो बच्चे भी उनका आदर नहीं करेंगे।

10. बचपन में ही, यही संसार की रीति है यह कहकर झूठ बोलना, धोखाधड़ी करना मत सिखाओ। वे गलती करते हैं तो उन्हें डाँटो और समझाओ, सत्य और न्याय को अपनाना सिखाओ।

11. यह ध्यान रखें कि संध्या वंदना की घंटी बजते समय सब बच्चे घर में हों और प्रार्थना करने के बाद माता–पिता के हाथों के चुंबन करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

    जब बच्चे बारह साल के हो जाते हैं, तो माता–पिता को ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उस समय उनके उम्र के हिसाब से किसी काम में उसे व्यस्त रखें और पर्व, शादी आदि

में बाहर न भेजें। लड़कियों को सज–धज कर त्योहारों में और दुल्हन की सहेली के रूप में भेजना आदि प्रथा शैतान की चाल है।

12. माता–पिता अपने परिवार की प्रभुता, अहंकार और झूठा अभिमान दिखाने के लिए लड़कियों को महंगे कपड़े और आभूषणों से सजाकर लोगों के सामने भेजते रहते हैं। ईश्वर ही जानते हैं कि कितनी आत्मायें इससे नरक की ओर खींचती जाती है। एक लड़की का आभूषण उसकी भक्ति, विनम्रता और मर्यादा है।

13. बच्चों के प्रति माता–पिता के बीच में कोई झगड़ा न हो। बच्चों के आपसी झगड़ों को अनावश्यक तूल देकर झगड़ा बढ़ाने वाले माता–पिता बच्चों जैसे ही नासमझ हैं।

14. बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो उनके भावी जीवन को चुनने के लिए उन्हें पूर्ण अधिकार देना चाहिए। ईश्वर ही उन्हें प्रेरणा देते हैं और चुनने का उत्तरदायित्व उनका है। इसमें गलती के कारण कितने माता–पिता और बच्चे नरक जाते हैं। लड़के जब सोलह या अठारह और लड़कियाँ चौदह और सोलह साल के होने के बाद निर्णय में विलंब नहीं करना चाहिए। लेकिन विवाह तय करने के

पहले उनकी सहमति लेना जरूरी है। रिश्तेदारों की संपत्ति या सामाजिक स्थिति की अपेक्षा व्यक्ति के सदाचरण और सद्‌गुणों पर ज्यादा ध्यान दे, नहीं तो माता–पिता और बच्चों को आनन्द के बदले अति दुःख और संकट प्राप्त होगा।

15. बच्चे सयाने और कार्यकुशल होने पर माता–पिता स्वयं कमजोर और असहाय अनुभव न करें। जहाँ तक हो सके, परिवार के कार्यभार अपने पास ही रखें। अविवेकपूर्ण रवैये से कितने माता–पिता को दुःख झेलना पड़ा है।

16. माता–पिता के मरने के पहले ही बच्चों को अलग–अलग घरों में बसाओ। वृद्धावस्था में सुबोध खोने से पहले संपत्ति का बटवारा कर देना। नहीं तो माता–पिता के मरने के बाद बच्चों के बीच लड़ाई–झगड़े के पाप का उत्तरदायित्व माता–पिता पर ही होगा।

अंत में मेरे बच्चों, अपने माता–पिता का आदर करो और उनके मन को दुःख ना पहुँचाओ। याद रखो, चौथी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले परलोक में ही नहीं इसलोक में भी शापित होंगे। अक्रैस्तव देश जापान में एक माँ के तीन पुत्र थे। वे बहुत गरीब होने के

कारण माँ की सही देखभाल नहीं कर सकते थे। उस देश में चोरों को फाँसी देने और चोरों को पकड़ने पर अच्छा ईनाम दिया जाता था। ऐसे में माँ के संरक्षण के खर्च के लिए उनमें से एक ने चोर होने का बहाना किया और बाकी के दोनों भाईयों ने उसे पकड़कर सरकार के हवाले कर दिया, और ईनाम पा लिया। उसके बाद वह दोनों चोर के पास जाकर बड़े भावुक होकर विदाई लेते हैं और माँ के लिए बड़ी धीरता से मृत्यु दण्ड स्वीकार करने की सलाह देते हैं। यह जेल अधिकारी ने देख लिया और यह जाँच की कि चोर के लिए उन्हें इतनी सहानुभुति क्यों है? तब उन्हें मालूम पड़ा कि यह कोई चोर नहीं, बल्कि माँ के प्रति प्रेम के कारण भाईयों में से एक मरने को तैयार हुआ है। जब राजा को यह बात पता चली तो उसने न केवल उसे छोड़ दिया बल्कि उनकी माँ के मरने तक उसे जीवनवृत्ति देने की भी आज्ञा दी। बच्चों इस कहानी को सदा याद रखें।

पवित्र परिवार के फादर कुरियाकोस एलियास चावरा
मान्नानम और टी.ओ.सी.डी. के अन्य आश्रमों के प्रियोर
13 फरवरी 1868

संत कुरियाकोस एलियास चावरा की संक्षिप्त जीवनी

संत कुरियाकोस एलियास चावरा का जन्म 1805 फरवरी 10 तारीख को आलपुज़ा के कैनकरी गाँव के चावरा परिवार में हुआ। प्राथमिक शिक्षा के बाद चेर्तला की सेंट मेरीस चर्च से लगा हुआ पल्लिपुरम सेमिनारी में प्रवेश लिया। फादर थॉमस पालेक्कल आपके आध्यात्मिक गुरू थे। सन् 1827 में सब–डायकनेट और 1828 में डायकनेट स्वीकार किया। सन् 1829 नवंबर 29 को अरंतुकल सेंट आनड्रूस चर्च में पुरोहिताई अभिषेक हुआ। बचपन से ही येसु नाम जपने की आदत डाले जाने के कारण आपने येसु और कलीसिया के लिए अपना जीवन समर्पण करने का निश्चय किया।

पुरोहिताभिषेक के बाद अपने गुरूजन फादर थॉमस पालेक्कल और फादर थॉमस पोरूकरा के साथ मिलकर मान्नानम् में एक आध्यात्मिक जीवन सारिणी की नींव डाली। ब्रदर कनियानतरा याकूब भी जो इन लोगों की तरह सांसारिक जीवन से अलग होकर एकांत में आध्यात्मिक जीवन जीने की आदर्श से प्रभावित होकर इनके साथ हो लिये। सन् 1831 में इन लोगों ने मान्नानम में एक

आध्यात्मिक भवन बनाया और उसे नाम दिया – 'बेत राउमा' जिसका अर्थ है – 'पहाड़ी के ऊपर का घर'। यह विकसित होकर 'अमलोलभव दास संघ' नाम के सन्यासी पुरोहितों का भवन बन गया।

भारत के प्रथम सन्यास समाज सि.एम.आई. समाज का प्रारंभ इसी प्रकार हुआ। सन् 1841 में फादर थॉमस पालेक्कल और सन् 1846 में फादर थॉमस पोरूकरा के मरणोपरान्त इस नये समाज का पूरा उत्तरदायित्व फादर कुरियाकोस पर रहा। बिशप रोक्कोस के आगमन से प्रारंभ हुए पाखण्डता से सीरो मलबार कलीसिया को मुक्त करने के लिए 1861 में आर्चबिशप बरणरदीनोस ने फादर कुरियाकोस को सीरो मलबार समूह का विकर जनरल बनाया और फादर कुरियाकोस उस पाखण्डता का उन्मूलन करने में सफल रहे।

सन् 1831 से फादर कुरियाकोस ने विभिन्न आध्यात्मिक और समाज कल्याण के कार्यक्रमों को आरंभ किया, जिसमें प्रमुख है – शिक्षा की प्रगति के लिए मान्नानम में संस्कृत स्कूल और मुद्रणालय की स्थापना, आराधना क्रम का नवीनीकरण, गिरजाघरों में रविवारीय प्रवचन और लोगों की आध्यात्मिक नवोत्थान के लिए ध्यान साधना का

प्रचलन आदि। सन् 1866 में उन्होंने भारत का प्रथम सन्यासिनी समाज सि.एम.सी. की स्थापना की।

जिन्दगी के आखिरी सात साल वह केरल के कूननमाव में रहे, जहाँ उनकी मृत्यु 3 जनवरी, 1871 में हुई और कूननमाव के संत फिलोमिना चर्च में आपका शरीर दफनाया गया। बाद में 24 मई 1889 में आपके भौतिक अवशेष सि.एम.आई. समाज के मातृभवन मान्नानम के संत जोसेफ चर्च में स्थानांतरित किये गए।

अपने जीवन काल में ही अपने त्यागोज्जल और पावन जीवन से संत माने गये फादर कुरियाकोस मरणोपरान्त भी अनेकों के लिए आश्रय केन्द्र बने। उनकी मध्यस्थता से बहुत सारे लोगों को अनुग्रह प्राप्त हुआ। भारत की प्रथम संत, संत अलफोनसा ने अपनी बीमारी में संत चावरा की मध्यस्थता से प्रार्थना की और तत्काल उन्हें चंगाई प्राप्त हुई, जिस बात को खुद संत अलफोनसा ने लिखा था।

संत कुरियाकोस एलियास चावरा को संत घोषित करने की प्रक्रिया 1956 में प्रारंभ हुई और फरवरी 8, 1986 में केरल के कोट्टयम में संत पिता जॉन पॉल द्वितीय द्वारा 'धन्य' घोषित किये गये। 2014

नवंबर 23 को संत पिता फ्रांसिस ने रोम के एक भव्य समारोह में धन्य फादर कुरियाकोस एलियास चावरा को 'संत' घोषित किया। मान्नानम के संत जोसेफ देवालय की बेदी के सामने है संत चावरा के पार्थिव अवशेषों का स्मारक।

संत चावरा से परिवारों के लिए प्रार्थना

हे प्रभु ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्रात्मा, हम तुझे धन्यवाद देते हैं कि तूने संत चावरा को परिवारों के संरक्षण के रूप में हमें दिया है।

पवित्र परिवार के भक्त हे संत चावरा, हमारे लिए प्रार्थना कर कि हमारे परिवारों में शान्ति, प्रेम, एकता एवं समृद्धि सदा रहे। विश्वास में दृढ़ रहने और ईश्वर के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा में बढ़ने में हमारी मदद कर। जिन्दगी के हर पल में ईश्वर को धन्यवाद देने और हर दुःख–संकट को पार करने के लिए हमें शक्ति प्रदान कर। प्रति दिन सिर्फ ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीने और उसके संरक्षण में सदा समर्पित रहना हमें सिखा दे।

हमारे परिवार के हर सदस्य को अपने पितृतुल्य संरक्षण में ले और हर जरूरत में उनकी सहायता कर। हमारे परिवारों से पुरोहिताई एवं समर्पित जीवन के लिए बुलाहट में बढ़ावा दे। आपकी सहायता और संरक्षण पर भरोसा करते हुए आज हम जिस अनुग्रह के लिए विनती कर रहे हैं, उसे हमारे प्रभु येसु के द्वारा पिता ईश्वर को समर्पित करके उसे पूरा कर।

आमेन्

1 हे पिता, 1 प्रणाम मरियम, 1 त्रित्व स्तुति

संत कुरियाकोस एलियास चावरा के जिन्दगी की महत्वपूर्ण घटनायें।

10-02-1805 केरल के कैनकरी में जन्म।

18-02-1805 चेन्नकरी चर्च में बपतिस्मा।

08-09-1805 वेच्चूर चर्च में माता मरियम के सेवक के रूप में समर्पण।

18-10-1810 प्राथमिक शिक्षा का प्रारंभ

1818 पल्लिपुरम सेमिनारी में प्रवेश।

29-01-1829 पुरोहिताभिषेक (अरतुन्कल चर्च में)।

11-05-1831 भारत के प्रथम सन्यास समाज (सि. एम.आई.) की स्थापना।

1831 रविवारीय प्रवचन और ध्यान साधना का प्रचार।

1833 सीरो मलबार चर्च के लिए पहले सेमिनारी की स्थापना।

1838 केरल में पहली बार 'क्रूस रास्ता' मान्नानम में प्रारंभ किया।

1844	सीरो मलबार चर्च में धार्मिक विषयों के आचार्य और परीक्षक के रूप में नियुक्ति।
1846	सीरो मलबार चर्च में पहला मुद्रणालय और प्रकाशन केन्द्र की स्थापना मान्नानम में।
1846	मान्नानम में पहला कैथलिक संस्कृत विद्यालय की स्थापना।
1853	मान्नानम में सीरो मलबार चर्च के पहले विश्वास प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना।
08-12-1855	भारत की कलीसिया में सन्यास व्रत समर्पण किये प्रथम पुरोहित।
1857	प्रभु येसु के जन्म पर आधारित 10 'एकलोग' (लघु नाटिकायें) लिखकर कून्ननमाव में प्रस्तुत किया।
08-06-1861	आर्चडीकन के काल के बाद सीरो मलबार चर्च के पहले विकर जनरल के रूप में नियुक्ति।
1861	रोकोस पाखण्डता के उन्मूलन के लिए प्रयास।

1862 मलयालम भाषा के पहले खण्डकाव्य 'अनस्थासिया की शहादत' की रचना।

1862-1869 सीरो मलबार चर्च के पुरोहितों की प्रार्थना का संपादन, आराधना क्रम का अनुष्ठान विधि, आराधना क्रम का कलेण्डर, मृतकों के लिए प्रार्थना, माता मरियम की उपासना आदि की रचना।

1864 माता मरियम की स्तुति में मई महीने की भक्ति का मान्नानम में प्रारंभ।

1864 'हर गिरजा के साथ एक स्कूल' आशय विकारी जनरल के रूप में कार्यान्वित किया।

13-02-1866 फादर लेयोपोल्ड के साथ केरल की पहली सन्यासिनी समाज का कून्ननमाव में प्रारंभ किया।

1866 केरल में पवित्र परम प्रसाद की चालीस घण्टे की आराधना कून्ननमाव में प्रारंभ किया।

1868	लड़कियों के लिए पहला स्कूल और बोर्डिंग हाऊस लयोपोल्द मिशनरी के सहयोग से कून्ननमाव में प्रारंभ किया।
13-02-1868	"एक भले पिता का अंतिम आदेश" नामक पारिवारिक नियमावली लिखा।
1869	कैनकरी में अनाथ और वृद्ध लोगों के लिए पहला अनाथालय की स्थापना की।
03-01-1871	मृत्यु (सेंट जोसेफ आश्रम, कून्ननमाव)
04-01-1871	अंतिम संस्कार (सेंट फिनोमिना चर्च, कून्ननमाव)।
24-05-1889	कून्ननमाव से पार्थिव अवशेष मान्नानम में स्थानांतर।
21-12-1936	संत घोषित करने की प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए सन्यास समाज का निर्णय।
09-12-1955	प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए रोम से अनुमति।

03-01-1958 'ईश्वर का सेवक' नाम।

08-02-1986 'धन्य' घोषित।

20-12-1987 समाज सेवा के आदर में भारतीय सरकार द्वारा डाक टिकट प्रकाशन।

23-11-2014 रोम में संत पिता फ्रांसिस द्वारा 'संत' घोषित।

For more information:

Chavara Central Secretariat
CMI Prior General's House
Chavara Hills, Kakkanad, Post Box 3105
Kochi 682 030 Kerala, India

Phone: +91 484 2881802
www.chavaralibrary.in